Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

वर्तमान संस्थागत संगीत-शिक्षण पद्धति: उपलब्धियाँ, चुनौतियाँ एवं सुझाव

DR. AKANSHA PAL

Guest Lecturer, C.M.P. Degree College, Prayagraj, U.P.

सारांश

देखा जाए तो संगीत की मुख्यतः दो पद्धतियाँ है - घराना पद्धति एवं संस्थागत शिक्षण पद्धति। मध्यकाल की देन घराना आज भी संगीत के शिक्षण में विद्यमान है। संस्थागत संगीत-शिक्षण पद्धति मूलतः सामूहिक शिक्षा पर आधारित है जिसमें गुरू एक साथ कई शिष्यों को शिक्षा प्रदान करते हैं। भारत वर्ष में अंग्रेजी शासन की स्थापना के पश्चात् संस्थागत शिक्षण पद्धति का आगमन हुआ। इस शिक्षण पद्धति के अन्तर्गत शिक्षा प्रदान करने हेतु माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय शिक्षण पद्धति के रूप में एक व्यवस्थित रूपरेखा तय की गई जिसमें एक निश्चित पाठ्यक्रम एवं परीक्षा प्रणाली का भी प्रवेश हुआ और इस प्रकार संस्थागत संगीत-शिक्षण प्रणाली संगीत के विस्तृत रूप को विद्यार्थियों के समझ रखने में सक्षम हुई परन्तु इसके कारण जहां एक ओर संगीत के संस्थागत शिक्षण के प्रचार से संगीत की संवादात्मक प्रयोजनीयता को बढ़ावा मिला वही दूसरी ओर संस्थागत संगीत-शिक्षण व्यवस्था को कई प्रकार की चुनौतियों का सामना भी करना पड़ा। अतः इन्ही विचारों के साथ मूल्यांकन शोध प्रविधि को अपनाते हुए इस शोध विषय का पल्लवन हुआ है। जिसका विस्तारपूर्वक वर्णन मेरे मुख्य शोध प्रपत्र के माध्यम से प्रस्तुत किया जा रहा है।

बीज शब्द: संस्थागत पद्धति, संगीत-शिक्षण, गुरू शिष्य परम्परा, शिक्षा।

भूमिका

वर्तमान समय में राष्ट्र और समाज के विकास हेतु शिक्षा को अतिआवश्यक माना गया है। 'शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। शिक्षा द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास उसके ज्ञान एवं कला-कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और सभ्य सुसंस्कृत और योग्य नागरिक बनाया जाता है। शिक्षा मनुष्य का सर्वांगीण विकास करती है।'1 प्राचीन काल से ही भारतीय सांगीतिक परम्परा के अन्तर्गत संगीत-शिक्षण पद्धति का उल्लेख प्राप्त होता है। वैदिक युग से चली आ रही हमारी यह परम्परा जिसमें गुरु से शिष्य को शिक्षा दी जाती रही हैं, फिर संगीत का इतिहास बना, राग बने, ताल बने फिर शनै-शनै विभिन शैलियाँ बनी, परम्पराएं बनी, तत्पश्चात् गुरुकुल पद्धतियों ने हमारे यहाँ एक महत्वपूर्ण स्थान ग्रहण कर लिया। इस प्रकार गुरू-शिश्य परम्परा संगीत-शिक्षण की सबसे प्राचीनतम एवं सर्वश्रेष्ठ शिक्षण प्रणाली रही है।

वर्तमान समय में देखा जाए तो संगीत के क्षेत्र मे ऐसी बहुत सी संगीत-शिक्षण संस्थाएं अपने-अपने तरीके से अपनी सेवाएं प्रदान कर रही है जिसके कारण 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' का उद्देश्य पूर्ण होता दिख रहा है। वर्तमान समय में संस्थागत संगीत-शिक्षण पद्धति जिस रूप में प्रकाशित हो रही है। उस पर सामाजिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक एवं तत्कालीन प्रषासनिक व्यवस्था में नवीन प्रयोगों का विशेष प्रभाव पड़ रहा है जिसके फलस्वरूप संस्थागत संगीत-शिक्षण पद्धति एवं उसके प्रयोजन पर विभिन्न प्रकार से प्रष्न चिन्ह लगते प्रतीत होते हैं। प्रारम्भ से ही ग्रन्थों में ऐसा उल्लेख पाया गया है कि समय-समय पर संगीत के विकासात्मक चरणों में शिक्षा और शिक्षण प्रक्रिया की दृश्टि से साथ

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

ही संगीत के आन्तरिक विकास की दृश्टि देश, काल तथा परिस्थितियों के अनुरूप परिवर्तन होते चले आ रहें है। तथापि संगीत-शिक्षण का मौखिक स्वरूप एवं गुरू-शिश्य के आन्तरिक प्रेम तथा विष्वास का सम्बन्ध अनवरत रूप से चला आ रहा है। इन्हीं दोनो के मध्य संगीत-शिक्षण की प्रक्रिया प्रवाहित होकर मौखिक रूप में ही एक-दूसरे को स्थानान्तरित होती चली आ रही है। संगीत की विद्या न तो लिखकर और न ही पुस्तकों में संग्रहीत करके रखी जा सकती है। परन्तु बन्दिषों को तथा राग-स्वरूपों के षास्त्रीय विवरण को पुस्तकों के माध्यम से संग्रहीत करने के साथ ही जिस संगीत को गुरूकुल में रहकर सीखा जाता रहा है वह आज विभिन्न संगीत-शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से अन्य विषयों के समान ही एक सम्मानजनक विषय के रूप में सिखाया-पढ़ाया जाना सम्भव हो पा रहा है ऐसी मौखिक एवं प्रदर्शनात्मक कला में अभिरूचि रखने वाले सामान्यजनों हेतु सामूहिक संगीत-शिक्षण प्रदान करने वाली ऐसी संगीत-शिक्षण संस्थाओं का श्री गणेश विष्णुद्वय अर्थात पण्डित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर एवं पण्डित विष्णु नारायण भातखण्डे के द्वारा सम्भव हो पाया। जिसके फलस्वरूप संस्थागत संगीत-शिक्षण पद्धति ने बहुत सी उपलब्धियों को प्राप्त किया है जिनका वर्णन निम्नवत् किया जा रहा है -

वर्तमान संगीत-शिक्षण पद्धति की उपलब्धियाँ

1.संस्थागत संगीत-शिक्षण के क्षेत्र में महिलाओं की आश्चर्यजनक उन्नति:

वर्तमान समय में संगीत कैरियर के रूप में अपनाकर महिलाओं ने संगीत के हर पक्ष पर अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया है। संगीत की चाहे कोई भी विधा हो शास्त्रीय, उपशास्त्रीय, लोक संगीत, सुगम संगीत, वाद्य संगीत, नृत्य इनके अतिरिक्त संगीत सम्मेलन आकाशवाणी, दूरदर्शन, अधिकांश संगीत-शिक्षण संस्थाओं इत्यादि क्षेत्रों में महिलाओं की आश्चर्यचकित कर देने वाली उन्नति सराहनीय रही है।

2.संस्थागत संगीत-शिक्षण पद्धति के माध्यम से संगीत की सर्वसुलभता:

विष्णुद्वय के अथक प्रयासों के कारण संगीत का शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से सुलभ हो पाया जहाँ एक ओर घरानेदार शिक्षण पद्धति में सामान्यजनों के लिए संगीत की शिक्षा लेना दुर्लभ सा प्रतीत होता था वहीं दूसरी ओर संरचनात्मक शिक्षण पद्धति के फलस्वरूप संगीत की शिक्षा दीक्षा विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में अन्य विषयों की भाँति संगीत का एक विषय के रूप में विद्यमान होना उसकी सर्वसुलभता की ओर संकेत करता है।

3.संस्थागत संगीत-शिक्षण पद्धति द्वारा श्रोतावर्ग का निर्माण:

संगीत की आधुनिक शिक्षण पद्धति में तानसेन के स्थान पर कानसेन अधिक पैदा किए हैं अर्थात् आज संगीत को सभी श्रेणी के सामान्यजन सीखने हेतु उत्सुक और लालायित हैं। परिणामस्वरूप वह व्यक्ति जो संगीत की थोड़ी बहुत समझ रखता हो वह कलाकार द्वारा प्रस्तुत किए जा रहे राग का नाम सरलता से बता सकता है। एक विस्तृत श्रोता वर्ग तैयार होता दिख रहा है।

4. संस्थागत संगीत-शिक्षण पद्धति में शिक्षक-कलाकारों का महत्व:

आज की संस्थागत संगीत-शिक्षण पद्धति में शिक्षक एवं कलाकार दो अलग-अलग ध्रुव दिखाई देते हैं। प्रायः देखा जाए तो शिक्षक अध्यापन हेतु एवं कलाकार कला की उत्कृष्टता हेतु प्रयासरत रहता है और यदि ये दोनों ही गुण एक ही व्यक्ति में विद्यमान हों तो वे शिक्षक-कलाकार की श्रेणी में आयेंगे। आधुनिक शिक्षण पद्धति में ऐसे ही कुशल और योग्य शिक्षक कलाकारों की नियुक्ति से संस्थागत शिक्षण के स्तर में वृद्धि हुई है।

5. संस्थागत संगीत-शिक्षण पद्धति में रोजगार के अवसर:

अन्य विषयों के समान ही संगीत विषय में भी रोजगार के सम्मानजनक अवसर प्राप्त होने लगे हैं। जिसके कारण संगीत के क्षेत्र में भी विद्यार्थी कुशल निर्देशक, व्याख्याता, प्रोफेसर, प्रोड्यूसर, विज्ञापन, दूरदर्शन आकाशवाणी एवं उच्चस्थ पदाधिकारी आदि के रूप में अपना स्थान प्राप्त करने में समर्थ हो रहे हैं। नई शिक्षा नीति 2020-21 को देखा जाये तो वह भी इस और इंगित करती है।

6. संस्थागत शिक्षण पद्धति में संगीत के दोनों ही पक्षों का समान महत्व:

इस शिक्षण पद्धति में संगीत के क्रियात्मक एवं सैद्धान्तिक दोनों ही पक्षों का समान महत्व दृष्टिगोचर होता है। इन दोनों ही पक्षों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है जिससे विद्यार्थियों का संगीत के दोनों पक्षों पर समान अधिकार हो ताकि वे भविष्य में अगर चाहे तो संगीत के किसी भी एक पक्ष पर और अधिक पकड़ बनाकर उसकी जानकारी प्राप्त करके अपना लक्ष्य चुन सकें। उदाहरणार्थ कुशल वक्ता बनना, योग्य कलाकार बनना इत्यादि।

7. संस्थागत संगीत-शिक्षण पद्धति में वैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग:

आज विद्यार्थियों को संस्थागत संगीत-शिक्षणसंस्थाओं में अनेक प्रकार की आधुनिकतम सुविधाएं प्रदान की जा रही है यथा नवीन शिक्षण विधियो संसाधनों वैज्ञानिक उपकरणो इत्यादि का प्रयोग किया जा रहा है जिसके, फलस्वरूप संगीत के क्षेत्र में नवीन आयाम प्रदर्शित होते हुए दिख रहे है।

8. संस्थागत संगीत-शिक्षण पद्धति में स्वरलिपि पद्धति की उपयोगिता:

संगीत में स्वरलिपि पद्धति के कारण ही हमारा भारतीय संगीत समाज के निकट आ सका है।2 स्वरलिपि पद्धति की सहायता से संगीत सीखने वाले विद्यार्थियों को अत्यधिक सुविधा होती है। जिसके फलस्वरूप शिक्षक कम से कम समयावधि में अधिक से अधिक विद्यार्थियों को सामूहिक शिक्षण प्रदान कर सकने में सक्षम होते हैं साथ ही विद्यार्थी उनका गायन अथवा वादन सहायक उपकरणों की सहायता से शिक्षक की अनुपस्थिति में घर पर भी कर सकते हैं।

9. संस्थाओं के द्वारा आयोजित संगीत सम्मेलन व समारोह एवं गोश्ठियां:

संस्थाओं के द्वारा आयोजित वाले गोष्ठियों, कार्यशालाओं सेमिनारों व्याख्यानों, प्रशिक्षणों आदि के कारण विद्यार्थियों को राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के विद्वतजनों से भेंटवार्ता एवं उनके विचार को जानने का अवसर प्राप्त होता है। जिससे छात्रों के मन में अपने विषय के प्रति और अधिक जागरूकता आती और साथ ही संगीत की गुणवत्ता में भी निखार आता है।

10. संस्थागत संगीत-शिक्षण पद्धति में परस्पर सहायता एवं प्रतिस्पर्धा की भावना:

संस्थागत शिक्षण पद्धति के अन्तर्गत छात्र-छात्राएं सम्मिलित रूप से संगीत की शिक्षा ग्रहण करते हैं जिसके कारण उनके मध्य परस्पर सहायता और प्रतिस्पर्धा की स्वस्थ भावना विकसित होती है।

11. संस्थागत संगीत-शिक्षण पद्धति में छात्रवृत्तियों की व्यवस्था:

वर्तमान समय में संस्थागत संगीत-शिक्षण पद्धति में मेघावी छात्र-छात्राओं को प्रोत्साहित करने हेतु अन्य विषयों के विद्यार्थियों के समान ही सरकार द्वारा छात्रवृत्तियों, फेलोशिप व अन्य सुविधाएं प्रदान की जा रही है जिसके परिणामस्वरूप प्रतिभावान विद्यार्थी कुशल गुरूजनों के सानिध्य में अपनी कला को और अधिक निखार सकें।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

वर्तमान संगीत-शिक्षण पद्धति में चुनौतियाँ

1. संगीत साधना का गिरता स्तर:

संगीत की शिक्षा ही यथेष्ट नहीं होती बल्कि उसकी साधना भी आवश्यक होती है। प्रायः ऐसा देखा जा रहा है कि संगीत के विद्यार्थी टी0वी0 पर प्रसारित होने वाले टैलेन्ट शोज से प्रभावित होकर थोड़ा बहुत संगीत का ज्ञान प्राप्त करके कलाकार बनने का सपना देखने लगते है। जबकि वास्तविकता तो यह है कि संगीत में बहुत साधना तपस्या, संयम, लगन एवं समय की आवश्यकता होती है। ऐसा न होने से संगीत के साधना पक्ष का अभाव दृष्टिगोचर होने लगता है।

2. संस्थागत संगीत-शिक्षण का सामूहिक स्वरूप:

वर्तमान संस्थागत शिक्षण पद्धति में व्यक्तिगत शिक्षण के स्थान पर सामूहिक शिक्षण एक बड़ी चुनौती के रूप में परिलक्षित होती है क्योंकि एक ही कक्षा में सभी प्रकार के विद्यार्थियों को अल्प एवं सीमित समयावधि में सामूहिक रूप से शिक्षा ग्रहण करते हैं जिसके कारण शिक्षक के लिए परखना कठिन हो जाता है कि उनमें कौन सा विद्यार्थी सही तरीके से गायन या वादन कर रहा है और कौन नहीं। कहने का तात्पर्य यह है कि सम्पन्न छात्रों को उस प्रकार से शिक्षा नहीं प्राप्त हो पाती जैसे होनी चाहिए।

3. संस्थागत संगीत-शिक्षण पद्धति योग्य कलाकार सृजन में असमर्थ:

आज संस्थागत शिक्षण पद्धति की सबसे गम्भीर समस्या है प्रतिभाशाली मंचीय कलाकारों की जन्मभूमि न बन पाना। कारण यह है कि संस्थाओं में परम्परागत शिक्षण जैसी व्यवस्था का अभाव और विद्यार्थियों को एक ही समय में अलग-अलग शैलियों के गुरुओं से ज्ञान प्राप्त करना जिसके कारण वह एक शैली को आत्मसात् नहीं कर पाते हैं फलस्वरूप इन विद्यार्थियों की कलात्मक क्षमता गुरु-शिष्य परम्परा से सीखे कलाकार की अपेक्षा कम होती है। इस प्रकार विद्यार्थी संगीत का कुशल समालोचक तो बन सकता है किन्तु शास्त्रीय संगीत का कुशल कलाकार बनने हेतु उसे किसी गुरु के सान्निध्य में रहकर ही संगीत की शिक्षा ग्रहण करना होगा।

4. संस्थागत संगीत-शिक्षण पद्धति में समय की अपर्याप्तता:

संगीत-शिक्षण संस्थाओं में समय की अपर्याप्तता चिन्ता का विषय है शिक्षकों को एक निश्चित समयावधि में निर्धारित पाठ्यक्रम को पूरा कराना होता है। 45-50 की कक्षा में शिक्षक को संगीत वाद्यों को मिलाना विद्यार्थियों की उपस्थिति लेना आदि में काफी समय निकल जाता है राग का परिचय बताना स्वरूप गाकर समझाना ऐसी स्थिति में संगीत का शिक्षण कार्य किस प्रकार सम्भव है।

5. संस्थागत संगीत-शिक्षण पद्धति में शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की अपर्याप्त संख्या:

प्रायः ऐसा देखा जाता है कि कई शिक्षण संस्थाओं में यदि संगीत शिक्षक है तो विद्यार्थियों की संख्या कम होती है और यदि विद्यार्थी है तो वहां शिक्षक नहीं है। इस प्रकार इसके कारण भी संस्थागत शिक्षण पद्धति का स्तर गिरता जा रहा है।

6. संस्थागत संगीत-शिक्षण पद्धति में श्रद्धावान एवं अनुशासित शिष्यों का अभाव:

आज शिक्षण संस्थाओं में श्रद्धावान एवं अनुशासित शिष्यों का अभाव सा दिखाई देता है। क्योंकि वर्तमान समय में अधिकतर विद्यार्थी मात्र उपाधि प्राप्ति के ध्येय से ही शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश लेते है। जिससे वे आजीविका के लिए नौकरी पा सके। वही दूसरी ओर ऐसा भी देखा जाता है कि प्रायः पाठ्यक्रम एवं समय का बंधन होने के कारण साथ ही संगीत के शिक्षकों को अपने विषय का पूर्ण ज्ञान न होने के कारण भी (संस्थाए) विद्यार्थियों को सन्तुष्ट करने में असमर्थ

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

होती हैं। फलतः इन्हीं सब कारणों से संगीत के विद्यार्थियों में अपने विषय एवं शिक्षकों के प्रति लगन, निष्ठा, श्रद्धा, अनुशासन इत्यादि का सर्वथा अभाव सा रहता है।

7. भिन्न-भिन्न परम्पराओं का प्रतिनिधित्व करते संगीत शिक्षक:

संस्थागत संगीत-शिक्षण पद्धति में विद्यार्थियों का चयन नामांकन अंकों के आधार पर होने के कारण शिक्षक को विद्यार्थी और विद्यार्थी को अपना शिक्षक चुनने का अधिकार नहीं होता जिसके कारण विद्यार्थी को अलग-अलग घरानों के शिक्षकों की कक्षाओं में सीखना पड़ता है और वह किसी एक घराने को साध नहीं पाता। जिस कारण उसे एक कलाकार के रूप में उभरने में कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ जाता है।

8. संस्थागत संगीत-शिक्षण पद्धति का दोषपूर्ण पाठ्यक्रम एवं परीक्षा प्रणाली:

संस्थागत संगीत-शिक्षणपद्धति में शिक्षकों को एक निश्चित समयावधि में एक निर्धारित पाठ्यक्रम को पूर्ण करने का जो बंधन होता है उसके कारण शिक्षक चाहकर भी विद्यार्थियों को अलग से समय नहीं दे पाते हैं। यही कारण है कि परम्परागत एवं संस्थागत पद्धति के शिष्यों में बहुत अन्तर दृष्टिगत होता है क्योंकि घरानेदार पद्धति में पाठ्यक्रम का कोई भी बंधन नहीं होने के कारण शिष्यों को एक ही राग की शिक्षा वर्षों तक प्रदान की जाती है। वहीं दूसरी ओर संस्थागत पद्धति में पाठ्यक्रम का बंधन होने के कारण विद्यार्थियों को हर वर्ष लगभग 10 से 12 राग सीखने पड़ते हैं फलस्वरूप उनमें स्वर, लय, ताल आदि कमियां दिखाई देती हैं। वर्तमान समय में संगीत-शिक्षणहेतु जिस परीक्षा प्रणाली की व्यवस्था की गई है वह विद्यार्थियों की योग्यता एवं प्रवीणता का उचित मूल्यांकन नहीं पाती जिसके कारण प्रतिभाशाली विद्यार्थी की प्रतिभा व्यर्थ होती दिखाई देती है।

9. संगीत-शिक्षण संस्थाओं में संगतकारों का अभाव:

प्रायः संस्थागत शिक्षण में संगतकारों का अभाव दृष्टिगत होता है। परीक्षा से कुछ दिन पहले तबला वादक या हारमोनियम वादक के साथ विद्यार्थियों को अभ्यास करवाया जाता है जिसके कारण विद्यार्थियों का ताल पक्ष कमजोर रह जाता है तथा तबला संगति के बिना शिक्षक को भी कक्षा में सिखाने में असुविधा होती है जबकि हर कक्षा में शिक्षक के साथ संगतकार की नियुक्ति भी अत्यन्त आवश्यक है। जिससे विद्यार्थियों को लय ताल की पूर्ण समझ कराया जा सकना सम्भव हो।

10. संस्थागत संगीत-शिक्षण पद्धति के कारण लुप्त होता परम्परागत शिक्षण:

एक ओर जहाँ हम सब संस्थागत शिक्षण पद्धति से जुड़ते जा रहे हैं वही दूसरी ओर कहीं न कहीं हम परम्परागत शिक्षण से दूर होते जा रहें हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि आज शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के मध्य प्रायः गुरू शिश्य के समान गुरू के प्रति निश्ठावान एवं दोनों के मध्य मधुर सम्बन्ध होने का सर्वथा अभाव दृश्टिगत होता जा रहा है।

11. संस्थागत शिक्षण पद्धति में प्रवेष प्रक्रिया का लचीलापन होना:

प्रायः संस्थाओं में मैनेजमेंट का यह कहना होता है कि यदि इतने विद्यार्थी न आए तो हम संस्था में संगीत विषय का पठन-पाठन स्थगित कर देंगे।3 ऐसी स्थिति में संगीत संस्थाओं को अयोग्य विद्यार्थियों का भी चयन करना पड़ जाता है जो कि संगीत जैसे क्रियात्मक विशय हेतु हानिकारक सिद्ध हो जाता है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

12. विद्यार्थियों में श्रवणात्मक संस्कार एवं वाद्य यन्त्रों को मिलाने का अभाव:

संस्थागत संगीत-शिक्षण पद्धति में कभी-कभी ऐसा देखा जाता है कि शिक्षक यदि अपने विद्यार्थियों को कुछ गाकर सुनाता है तो विद्यार्थी उसको सुनकर उसका अनुसरण करने में प्रायः विफल पाए जाते हैं। संगीत एक श्रवणात्मक विद्या है परन्तु विद्यार्थियों को स्वर आदि का सही अन्दाज न होने के कारण वह उसे ग्रहण करके हू-ब-हू उसी प्रकार गाने में स्वयं को असमर्थ पाता है। संस्थागत संगीत-शिक्षण पद्धति में समयाभाव होने के कारण एवं पाठ्यक्रम अधिक होने के कारण विद्यार्थियों का पूरा ध्यान उसे पूर्ण करने में ही रहता है जिस कारण उसका ध्यान वाद्य यन्त्र को मिलाने कि ओर नहीं जाता और उसका ज्ञान अधूरा रह जाता है।

वर्तमान संगीत-शिक्षण पद्धति को उच्चस्तरीय बनाने हेतु कुछ महत्वपूर्ण सुझाव

1. विद्यार्थियों को मंच प्रदर्शन हेतु प्रेरित करना:

संस्थागत संगीत पद्धति विद्यार्थियों को मंच प्रदर्शन हेतु प्रेरित करना चाहिए। चूंकि संगीत मंच प्रदर्शन कला है अतः मंच पर गाने, बजाने के साथ ही मंच प्रदर्शन की तकनीक, दर्शन एवं श्रोता वर्ग से किस प्रकार प्रतिक्रिया किया जाना चाहिए इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है। तभी विद्यार्थी कुशल कलाकार के रूप अपने आपको मंच स्थापित कर सकेगा।

2. उपशास्त्रीय गायन शैलियों का पाठ्यक्रम में उचित स्थान:

संस्थागत संगीत-शिक्षण पद्धति पाठ्यक्रम में शास्त्रीय संगीत साथ ही साथ उपशास्त्रीय गायन शैलियों को भी पाठ्यक्रम में उचित स्थान प्राप्त होना चाहिए। जिससे कि विद्यार्थियों में उपशास्त्रीय गायन शैली प्रति और अधिक रुचि उत्पन्न हो सके।

3. संस्थागत संगीत-शिक्षण पद्धति में वाद्ययंत्र मिलाने हेतु अलग शिक्षण व्यवस्था का होना:

वर्तमान समय में संगीत-शिक्षण संस्थाओं में ऐसे विद्यार्थियों को भी देखा जा सकता है जो अपने वाद्यों का वादन तो कुशलता से कर लेते हैं परन्तु उन्हें उन वाद्यों को मिलाने की समझ नहीं होती है। फलतः उनका यह अधूरा ज्ञान उन्हें भविष्य में बहुत सी कठिनाइयों का सामना करने पर विवश कर सकता है। इसलिए संस्थाओं में वाद्ययंत्र मिलाने की विधि सिखाने हेतु अलग से व्यवस्था होनी चाहिए।

4. संस्थागत एवं परम्परागत संगीत-शिक्षण पद्धतियों के गुणों का समन्वय:

संस्थागत संगीत-शिक्षणपद्धति के गुण एवं परम्परागत संगीत-शिक्षण पद्धति के गुण का समन्वय किया जाना चाहिए इसके साथ ही दोनों ही शिक्षण पद्धतियों के दोषों को भी उदार हृदय से दूर करने के प्रयास किए जाने चाहिए। तभी इस क्षेत्र में नवीन आयाम दृष्टिगत होंगे।

5. प्रायोगिक परीक्षा की पूर्व तैयारी:

संस्थागत संगीत-शिक्षणपद्धति के अन्तर्गत पाठ्यक्रम में जितने भी राग हो उन सभी रागों को विद्यार्थी च्वॉइस रागों की तरह ही तैयार करें मात्र एक राग की तैयारी करके परीक्षा उत्तीर्ण करने का उद्देश्य न हो।

6. छात्र-छात्राओं की सम्मिलित रूप से कक्षाएं संचालित न होना:

संस्थागत संगीत-शिक्षण पद्धति में छात्र एवं छात्राओं दोनों की ही सम्मिलित रूप से कक्षाएं ली जाती है। जिसके कारण उनको बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ जाता है क्योंकि स्त्री एवं पुरुष दोनों की गायन सीमा, गुण धर्म भिन्न-

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

भिन्न होते हैं। इसलिए संस्थागत शिक्षण पद्धति में ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए जिसमें छात्र एवं छात्राओं की कक्षाएं अलग-अलग संचालित की जाएं।

7. संगीत शिक्षा में एप्लाइड म्यूजिक सम्मिलित करना:

वर्तमान समय में संगीत के क्षेत्र में एप्लाइड म्यूजिक को सम्मिलित करने की आवश्यकता है। प्रत्येक विद्यार्थी की प्रतिभा को एक ही मापदण्ड से नहीं मापना चाहिए। और न ही उसकी प्रतिभा को अन्य विद्यार्थियों की प्रतिभा से कम ही समझना चाहिए। कहने का तात्पर्य यह है कि जिस विद्यार्थी की जिस भी क्षेत्र में रुचि हो उसे उसी क्षेत्र की विशेष शिक्षा और व्यवहारिक ज्ञान देना चाहिए तभी वह अपने जीवन में सफल सिद्ध हो सकेगा।

8. संगीत-शिक्षण संस्थाओं के उद्देश्यों में परिवर्तन:

संगीत-शिक्षण संस्थाओं का उद्देश्य न केवल विद्यार्थी का बौद्धिक विकास करना होता है अपितु सुयोग्य विद्यार्थियों का भी निर्माण करना है। जिससे भविष्य में वह एक सफल जीवन व्यतीत कर सके।

9. संगीत-शिक्षण संस्थाओं में दिग्गज कलाकारों को आमंत्रित किया जाए:

संगीत के क्षेत्र में दिग्गज कलाकारों को विजिटिंग प्रोफेसर के अन्तर्गत शिक्षण संस्थाओं में आमंत्रित करके विद्यार्थियों को विशेष प्रशिक्षण की सुविधा प्रदान की जा सकती है जिससे उनकी गुणवत्ता में अवश्यम्भावी परिवर्तन दृष्टिगत होंगे।

10. योग्यता परीक्षण के उपरान्त ही प्रवेश:

संस्थाओं में विद्यार्थियों का प्रवेश योग्यता परीक्षण के उपरान्त ही होना चाहिए। संगीत के अन्तर्गत क्रियात्मक एवं सैद्धान्तिक दोनों ही पक्षों का समान महत्व है। इसलिए लिखित परीक्षा के उपरान्त छात्र के क्रियात्मक पक्ष का मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

11. संगीत-शिक्षण संस्थाओं से मात्र कलाकार बनाने की इच्छा न करना:

वर्तमान समय में संगीत-शिक्षण की परिधि व्यापक और बहुआयामी हो चुकी है इस कारण संगीत-शिक्षण संस्थाओं से मात्र कलाकार उत्पन्न करने की इच्छा व्यर्थ है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में यह कह सकते है कि वर्तमान समय में अन्य सामाजिक परिवर्तनों के साथ-साथ संगीत के उद्देश्यों में भी परिवर्तन आए हैं। संगीत से की जाने वाली अपेक्षाओं में वृद्धि होने लगी है आज संगीत-शिक्षण के क्षेत्र में मंच प्रदर्शक बनने की क्षमता के साथ ही साथ कुशल शास्त्रकार, समीक्षक अध्यापक आदि पक्षों पर विशेषज्ञ निर्माण सकने की अपेक्षा की जाती है। इतना ही नहीं आज के शैक्षणिक परिवेश ने गुरु-शिष्य परम्परा के कड़े अनुशासित ढांचे को सरल और सुलभ बनाया है।

इस प्रकार युग परिवर्तन व समय की मांग को देखते हुए संगीत शिक्षण के क्षेत्र में विभिन परिवर्तन दृष्टिगत होते हैं। संगीत शिक्षा का नवीन रूप कायम करने हेतु गायकी अंग की शिक्षा प्रदान करने हेतु घरानेदार शिक्षण पद्धति में निहित गुणों को एवं संगीत के विश्लेषणात्मक अध्ययन की योग्य शिक्षा हेतु संस्थागत शिक्षण पद्धति में निहित गुणों को एकत्रित करने की आवश्यकता है क्योंकि इन दोनों ही शिक्षण पद्धतियों के समन्वय से ही संस्थागत संगीत-शिक्षण पद्धति का नवीन स्वरूप स्थापित हो सकेगा।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

सन्दर्भ सूची

1. सिंह यादव डॉ0 वीरेन्द्र (2014). भारत में उच्च शिक्षा, चुनौतियाँ एवं समाधान की दिशाएँ, अल्फा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली प्रथम संस्करण, पृष्ठ संख्या - 14
2. भारद्वाज डॉ0 प्रभा (2016). संगीत का सांस्कृतिक व सामाजिक पक्ष, साहित्यांगार जयपुर, प्रथम संस्करण, पृष्ठ 186
3. शर्मा, डॉ0 प्रेमलता (1992). संस्थागत संगीत की समस्याएं , संगीत कला विहार, मई 1992, पृष्ठ 10